महात्मा गांधी राज्य ग्रामीण विकास एवं पंचायत राज संस्थान - म.प्र.

पहल

ई–समाचार पत्र (मासिक) – चौहत्तरवां संस्करण (माह मार्च, 2022)

➔ "पहल" के इस संस्करण में .....

1. अपनी बात ....
2. आपदा के प्रकार – बादल फटना
3. पढुआ को आदर्श ग्राम पंचायत बनाने में सरपंच द्वारा किये गये अनोखे प्रयास
4. नौका विहार से पंचायत की आय में वृद्धि
5. 'अ' से अक्षर अभियान
6. सघन मिशन इंद्रधनुष 4.0
7. स्वच्छ पेयजल – भारत में शुद्ध पानी सभी को उपलब्ध कराना एक लक्ष्य
8. सागर जिले में प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना वाटरशेड विकास
9. धवाड़ एक आदर्श ग्राम पंचायत के रूप में विकसित है

प्रकाशन समिति

संरक्षक एवं सलाहकार
श्री उमाकांत उमराव (IAS)
प्रमुख सचिव,
मध्यप्रदेश शासन
पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग

प्रधान संपादक
श्री संजय कुमार सराफ,
संचालक,
महात्मा गांधी राज्य ग्रामीण विकास
एवं पंचायतराज संस्थान–म.प्र., जबलपुर

सह संपादक
श्रीमती सुनीता चौबे,
उप संचालक, म.गां.रा.ग्रा.वि.पं.रा.स.–म.प्र., जबलपुर

ई–न्यूज के सम्बन्ध में अपने फीडबैक एवं आलेख छपवाने हेतु कृपया इस पते पर मेल करें–mgsirdpahal@gmail.com
Our official Website : www.mgsird.org, Phone : 0761-2681450 Fax : 761-2681870
Designed & Developed By : Mr. Jay Kumar Shrivastava, Programmer, MGSIRD&PR, JABALPUR

अपनी बात...

''पहल'' मासिक ई–न्यूज लेटर का तेहत्तरवां संस्करण का प्रकाशन किया जा रहा है, जो वर्ष 2022 का तृतीय मासिक संस्करण है।

इस संस्करण में सतत विकास के 17 लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये झाबुआ जिले से साक्षरता का प्रतिशत बढाने तथा सभी के लिये समावेशी शिक्षा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से 'अ' से अक्षर अभियान चलाया जा रहा है, जिसे **''अ' से अक्षर अभियान''** एवं हाल ही में स्वास्थ्य मंत्रालय ने वर्चुअल माध्यम से सघन मिशन इंद्रधनुष 4.0 लॉन्च किया है, जिसे **''सघन मिशन इंद्रधनुष 4.0''** को समाचार आलेख के रूप में शामिल किया गया है।

इससे साथ–साथ **''आपदा के प्रकार – बादल फटना''**, **''पढुआ को आदर्श ग्राम पंचायत बनाने में सरपंच द्वारा किये गये अनोखे प्रयास''**, **''नौका विहार से पंचायत की आय में वृद्धि''**,, **''स्वच्छ पेयजल – भारत में शुद्ध पानी सभी को उपलब्ध कराना एक लक्ष्य''**, **''सागर जिले में प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना वाटरशेड विकास''** तथा **''धवाड़ एक आदर्श ग्राम पंचायत के रूप में विकसित है''**आदि आलेखों को शामिल किया गया है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'पहल' का यह संस्करण आपको अत्यंत रूचिकर, नवीन उपयोगी एवं आवश्यक जानकारी प्रदान करने वाला रहेगा।

शुभकामनाओं सहित।

संजय कुमार सराफ
संचालक

आपदा के प्रकार – बादल फटना

बादल फटना क्या है?

- कुछ किलोमीटर के दायरे के भीतर अचानक मूसलाधार वर्षा का होना बादल फटना कहलाता है यह आमतौर पर कुछ मिनट से अधिक समय तक नहीं होता है लेकिन पूरे क्षेत्र को बाढ़ग्रस्त करने में सक्षम होता है। बादल फटने से होने वाली वर्षा आमतौर पर 100 मिलीमीटर प्रति घंटे से अधिक होती है।

बादल फटने की परिघटना किस प्रकार निर्मित होती है?

- जल की सूक्ष्म बूंदों से पूरित मानसूनी बादल मैदानी भागों के उपर से होकर गति करते है। उष्ण वायु धाराएं इन बादलों को उपर की ओर धक्का देती रहती है और उन्हें वर्षा नहीं करने देती।
- निरंतर पहले से अधिक जल की बूंदे एकत्रित होती जाती है और पर्वत या पहाड़ी के उपरी भाग की ओर गति करने के साथ बादल का आकार बड़ा होता जाता है। बादल शीध्र ही गति करना बंद कर देते है क्योकि पर्वतों के उपरी भागों में पवन प्रवाह नाममात्र ही होता है।
- बादलों में जल की बूँदों को धारण करने वाली उष्ण वायु ठंड़ी हो जाती है। परिणामस्वरुप बादल गीले कागज के थैले की तरह फट जाता है और मसूलाधार वर्षा होती है।

भारत में बादल फटने का जोखिम –

- बादल फटने की विशिष्ट परिभाषा के अनुसार यदि लगभग 10 कि.मी. x 10 कि.मी क्षेत्र में प्रति घंटे 10 सेमी या उससे अधिक की वर्षा दर्ज की जाती है तो इसे बादल फटने की घटना के रुप में वर्गीकृत किया

जाता है। इसका अर्थ यह है कि आधे घंटे में 5 सेमी की वर्षा को भी बादल फटने के रुप में वर्गीकृत किया जाएगा। सामान्यतः भारत, एक वर्ष में लगभग 116 सेमी. वर्षा प्राप्त करता है अर्थात् देष में प्रत्येक क्षेत्र को औसत रुप से, केवल इतनो वर्षा की मात्रा प्राप्त करने की अपेक्षा करनी चाहिए। इसलिए बादल का फटना मात्र एक घंटे में उस क्षेत्र की वार्षिक वर्षा के 10–12 प्रतिषत के लिए जिम्मेदार होगा।

भूमंडलीय तापन के कारण पिछले कुछ दषकों में चरम वर्षण की घटनाओं में निरंतर वृद्धि हुई हैः यह माना जा रहा है कि संभवतः बादल फटने की घटनाओं में वृद्धि हो रही होगी।

बादल फटने की कुछ बड़ी घटनाएं		
2 अगस्त 2010	लेह लद्दाख	मात्र 1 घंटे में 25 सेमी वर्षा
29 सितम्बर 2010	राष्ट्रीय रक्षा अकादमी	मात्र 1 घंटे में 14.4 सेमी वर्षा
4 अक्टूबर 2010	पाषाण, पुणे	मात्र 1.5 घंटे में 18.2 सेमी वर्षा
26 जुलाई 2005	मुम्बई	10 घंटे में 144.8 सेमी वर्षा

बादल फटने की घटना का वितरण प्रतिरुप –

- बादल फटने की घटना मैदानी भागों में भी होती है, लेकिन पर्वतीय क्षेत्रों में इसके घटित होने की संभावना अधिक होती है क्योंकि इसका संबंध क्षेत्र की स्थलाकृति से होता है। उदाहरण के लिए खड़ी ढ़ाल वाली पहाड़ियॉ इन मेघों के निर्माण हेतु अनूकूल होती है। बादलों का फटना केवल उसी स्थिति में ध्यान आकर्षित करता है जब उसके परिणामस्वरुप जीवन और संपत्ति का बड़े पैमाने पर विनाष हुआ हो तो कि मुख्यतः पर्वतीय क्षेत्रों में होता है।

बादल फटने के परिणाम –

- आकस्मिक बाढ़/भूस्खलन
- मकान का ढ़हना, सम्पत्ति का नुकसान
- यातायात का अस्त–व्यस्त होना एवं
- बड़े पैमाने पर मानव जीवन की क्षति

बादल फटने के विषय में पूर्वानुमेयता

छोटे पैमाने पर घटित होने के कारण बादल फटने की घटना के पूर्वानुमान हेतु कोई संतोषजनक तकनीक नहीं है। बादल फटने के विषय में लगभग 6 घंटे पहले या कभी–कभी 12–14 घंटे पहले पता लगाने में समर्थ होने के लिए रडारों के अत्यधिक उच्च क्षमता वाले नेटवर्क की आवश्यकता होती है। यह अत्यधिक महंगा होगा। भारी वर्षा होने की संभावनाओं वाले क्षेत्रों की पहचान केवल सीमित पैमाने पर की जा सकती है। हालॉकि, बादल फटने की घटनाओं के अनुकूल क्षेत्रों एवं मौसम की स्थितियों की पहचान करके अधिकांश क्षति को टाला जा सकता है।

डॉ. त्रिलोचन सिंह
संकाय सदस्य

पढुआ को आदर्श ग्राम पंचायत बनाने में सरपंच द्वारा किये गये अनोखे प्रयास

पढुआ ग्राम पंचायत का परिचय

प्रदेश के जबलपुर मुख्यालय से 12 किलोमीटर दूर त्रिपुर सुंदरी मंदिर से लगी हुई हैं और विश्व पर्यटक स्थल भेडाघाट मात्र 8 किलो मीटर की दूरी पर स्थीत ग्राम पंचायत पढुआ जनपद पंचायत जबलपुर के लिए ही नही बल्कि पूरे जिले ओर प्रदेश के लिये रोल माडल बनती जा रही ग्राम पंचायत पढुआ। ग्राम पंचायत पढुआ के चहुमुखी विकास में श्री शिवप्रसाद पटेल, सरपंच का योगदान सराहनीय है।

मध्यप्रदेश में वर्ष 2015 में पंचायतराज संस्थाओं के प्रतिनिधियों का निर्वाचन हुआ। ग्राम पंचायत पढुआ में ग्रामवासियो ने अपने मतों का उपयोग करते हुये ग्राम पढुआ के शिवप्रसाद पटेल सरपंच का दायित्व सौंपा। श्री पटेल ने अपनी जिम्दारियों को बहुत अच्छे से पूरा करने प्रयास किया। प्रदेश की जिला पंचायत जबलपुर की जनपद पंचायत जबलपुर के अन्तर्गत ग्राम पंचायत पढुआ में ग्राम पढुआ, सिलुआ एवं जमुनिया ग्राम शामिल हैं। श्री शिवप्रसाद पटेल, राष्ट्रीय ग्रामीण विकास एवं पंचायतराज संस्थान, हैदराबाद से सर्टीफाईड मास्टर रिसोर्स हैं।

ग्राम पंचायत के उत्कृष्ट कार्यो के आधार पर मध्यप्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा दो बार प्रदेश स्तर पर ग्राम पंचायत को सम्मानित किया। ग्राम पंचायत को राष्ट्रीय स्तर पर तीन बार माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा सम्मानित किया गया। वर्ष 2017 से प्रत्येक 15 अगस्त व 26 जनवरी को जिला मुख्यालय जबलपुर मुख्य कार्यक्रम में विभिन्य मंत्रियो द्वारा पुरस्कृत किया गया।

विवादों का निपटारा

पहले ग्राम पंचायत में होने वाले वाद विवाद के कारण ग्राम पंचायत में अशांति एवम हरपल जमीन सम्बन्धी, पानी सम्बन्धी, भाई भतीजा वाद, शराब, वर्चस्व, पारिवारिक कारणों आपसी विवाद होना स्वभाविक होता था। जिससे थाने में, तहसील में, कोर्ट में, कलेक्टर आफिस में आये दिन ग्राम की शिकायतें होती रहती थी। जिससे लोगो पर अतिरिक्त खर्चा ओर आपसी विवाद बहुत दिनों तक चलते रहते थे। जिससे ग्राम में अशांति

व्यप्त होती थी। लोगो की आय का बहुत बड़ा हिस्सा कोर्ड कचहरी में खर्च हो जाता था जिससे परिवारों की आर्थिक स्थिति पर भी बुरा प्रभाव पड़ता था।

ग्राम पंचायत पढुआ जिला जबलपुर में ग्राम पंचायतवासी ग्राम पंचायत में आपसी सामन्जस और आपस में बातचीत कर आपसी मुद्दे ओर विवाद आपस मे सुलझा लेते हैं। ग्राम पंचायत पढुआ में वर्ष 2015 से 2022 तक 271 मुद्दे ओर विवाद लिये गये। आपस में विवादों के निपटारे से ग्राम पंचायत क्षेत्र में पहले से अब शांति है। आपस में भाईचारा एवं सामन्जस बढ़ गया है। शासन द्वारा ग्राम पंचायत क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाला ग्राम जमुनिया को विगत तीन वर्षो से विवाद विहीन ग्राम घोषित किया गया है।

आन्तरिक व बाह्य सड़कों का निर्माण

वर्ष 2015 के पहले ग्राम में प्रवेश करते ही कीचड़ ओर उबड़ खाबड़ कच्ची सड़क होती थी। प्रथम वारिस में ही गावो में कोई भी वाहन ले जाने में भारी परेशानी होती थी। जिससे ग्राम में उत्पादित फसलों को बाजार तक लेजाने में बहुत परेशानी होती थी। किसानों को अपनी फसलों को समय पर बाजार पहुचाने में बहुत समय लगता था जिससे उनकी फसल ओने पौने दामों में दलालों को बेचना पड़ता था।

कृषि उपकरणों को खेतों तक लाने ले जाने में बहुत पेरशान होना पड़ता था। बाहर से ग्राम पंचायत पढुआ तक पहुॅचने में लोग कतराते थे। बच्चे आगे की शिक्षा के लिये गांव से बाहर जाने से बरसात में डरते थे। वर्षा के समय लोग समय से पहले शाम को घर आ जाते थे। जंगली जीव जंतु का मिट्टी और कचरे में छुपे रहने खतरा बना रहता था। और किसी का स्वस्थ्य खराब होने प्रसूति होने पर बहुत मुस्किलो से मुख्य मार्ग तक लेकर जय जाता था जहाँ पर जान जाने का खतरा बना रहता था तथा दुर्घटनाएं हो जाती थी।

पहले गांव की सड़कें बहुत ही संकरी थी। इनका चौड़ीकरण भी किया जाना आवश्यकत था। सड़क के दोनों ओर ग्रामवासियों द्वारा अतिक्रमण कर लिया गया था। इस समस्या को ग्रामवासियों के सहयोग से निपटाया गया। जिसका परिणाम यह हुआ कि ग्रामवासियों द्वारा स्वैच्छा से अतिक्रमण हटा दिया गया।

ग्राम पंचायत पढुआ में सरपंच श्री शिवप्रसाद पटेल के प्रयासों से अब ग्राम पंचायत पढुआ में शामिल तीनों ग्रामों सिलुआ, पढुआ एवं जमुनिया तक पहुॅचने के लिए शासन की ''प्रधानमंत्री आवास योजना'' से पक्की सड़कें बन गई हैं। ग्रामों में आन्तरिक व बाह्य सड़कों के बन जाने से सभी ग्रामवासियों को बहुत सुविधा हो गई है।

सुविधायुक्त मुक्ति धाम का निर्माण

ग्राम पंचायत पढुआ में पहले कोई सुव्यवस्थित श्मसान स्थल नहीं बना था। गांव छोर में उपबद खाबद भूमि थी जहां बहुत अधिक तादात में झांडी–झंखाल लगा हुआ था। गांव में जब भी पहले किसी को मौत हो जाती थी तो उनका दाह संस्कार करने के लिए उस कटीली झाडी वाली जगह पर ले जाना मुश्किल हो जाता था। बरसात के मौसम में तो बड़ी परेशानी होती थी।

गांव के लोग भगवान जी से प्रार्थना करते थे हे भगवान वर्षा काल में किसी कि मृत्यु न हो। वहां पर चारों तरफ गन्दगी गन्दगी रहती थी। साँप, बिच्छु आदि सरी सूपों का खतरा बना रहता था। उस समय तो अंतिम यात्रा में शामिल लोगो को लगभग घन्टों खड़े ही रहना पड़ता था क्योकि बैठने की कोई व्यवस्था नही

थी। अंतिम संस्कार के बाद वहां पर उपयोग की गई सामग्री यहां–वहां फैली रहती थी। यह दृश्य देख कर बड़े बुजुर्ग से लेकर बच्चों में भी डर बना रहता था।

शासन की मुक्ति धाम निर्माण योजना से ग्राम पंचायत पढुआ में अब सर्वसुविधा युक्त, सुंदर मुक्तिधाम कर लिया गया है। जिससे ग्रामवासियों को अंतिम यात्रा व अंतिम संस्कार करने में बहुत सविधा हो गई है।

जल सरंक्षण कार्य

पहले ग्राम के शासकीय तालाब में अबैध कब्जा था। वर्ष के जनवरी, फरवरी में तालाब की गहराई कम होने से वे सूख जाते थे। जिससे गांव के पशुओं को पीने का पानी और लोगों को निस्तार करने के लिए पानी उपलब्ध नहीं हो पाता था। इन तालाबों को उपयोग कृषि फसलों की सिंचाई के लिए भी नहीं किया जा सकता था।

वर्ष 2016 में ग्राम पंचायत की पहल पर तालाब को अवैध कब्जे से मुक्त कराया गया। ग्राम वासियो के की सहभागिता से तालाब गहरीकरण कार्य किया गया। ग्रामवासियों के सहयोग से तालाब को 25 फिट गहरा कराया गया। तालाब गहरीकरण से निकली मिट्टी को किसानों ने अपने खतों पर डाला जिससे उन्हें उपजाउ खाद् मिली। इस मिट्टी के खेतों में डालने के बाद कृषि योग्य भूमि के रकबे में बढ़ोत्तरी हुई।

कृषकों को इससे अच्छा फसल उत्पादन प्राप्त हुआ। वर्तमान में ग्रामीण कृषक लगभग 150 एकड़ में भूमिगत जल तथा तालाब से सिंचाई करते हैं। ग्राम पंचायत पढुआ द्वारा दो तालाबों का गहरीकरण (खुदाई) कार्य में ग्राम वासियो की पूरी–पूरी सहभागिता मिली। ग्रामवासियों को जागरूक करते हुये बिना शासकीय राशि के आपस में संग्रहित धन और श्रमदान से तालाबों का गहरीकरण कार्य किया गया।

शिक्षा

ग्राम पंचायत पढुआ में पहले शाला भवन खस्ताहाल में था। खण्डरनुमा शाला भवन के आसपास गंदगी बनी रहती थी। आसपास सर्प और जहरीले जीव जंतु घूमते रहते थे। ग्राम पंचायत पढुआ में आगनवाड़ी केन्द्र के लिए भवन नहीं थे। ग्राम पंचायत क्षेत्र के ग्राम पढुआ, सिलुआ एवं जमुनिया की तीनों आंगनवाड़ी केन्द्रों का संचालन निजी घरों में किया जाता था। छात्र, छात्राओं, बच्चों में शाला एवं आंगनवाड़ी केन्द्र जाने व अभिभावकों को भेजने में उत्साह नही था। जिससे शिक्षा का स्तर लगातार गिरता जा रहा था।

ग्राम पंचायत पढुआ की पहल पर शासकीय भूमि को भू–माफियो से कब्जा मुक्त कराया गया। इस भूमि पर अब नवीन सर्वसुविधा युक्त आंगनवाड़ी भवन तैयार कर लिये गये हैं। इसी प्रकार से शाला भवन भी नवीन व सर्वसुविधायुक्त तैयार हो गया है। शाला भवनों में बाउन्ड्री वाल बनवा दी गई है। शाला परिसर में किचिन गार्डन एवं सुंदर–सुंदर पुष्पों के पौधे लगाये गये हैं। ग्राम पढुआ की शाला बिलकुल ''मॉर्डन स्कूल'' बन गया है।

इसके साथ ही साथ ग्राम पंचायत पढुआ में बच्चों के लिये संस्कार केंद्र स्वाध्याय केंद्र के नाम से संचालित किये जा रहे हैं। इन केन्द्रों में बच्चों को भारतीय संस्कृति के अनुसार महापुरुषों के जीवनगाथा, शारीरिक कौशल प्राथमिक शिक्षा सामाजिक रहन सहन आदि की शिक्षा दी जाती है।

ग्राम में पहले बहुत से व्यक्ति निरक्षर थे। ग्राम पंचायत पढुआ द्वारा साक्षर करने के लिए गांव के शिक्षित युवाओं को युवतियों को प्रति निरक्षर को साक्षर करने लिए ग्राम के लोगो के सहयोग से 50 रूपए दे कर साक्षर किया गया है।

ऐतिहासिक स्थलों की सुरक्षा व सौंदयीकरण

ग्राम पंचायत पढुआ की भौगोलिक सीमाएं पर्यावरण की सुंदरता से घिरी हुआ हुई हैं। रानी अवन्ती बाई परियोजना के माध्यम से निर्मित नहरें इस ग्राम पंचायत को आकर्षक व सिंचित भूमि वाली बनाती हैं। ग्राम पंचायत क्षेत्र के पास से ही रेल्वे लाईन है।

ग्राम पंचायत पढुआ के आस–पास बहुत महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल हैं। ग्राम पंचायत क्षेत्र के पास में

ही खेरमाई मंदिर, आदिनाथ दिगम्बर का मंदिर वाला पहाड़ पिसनहारी की मढ़िया जी, अंजनी माता मंदिर, त्रिपुर सुंदरी मंदिर हैं। ग्राम पंचायत के पास ही में प्राचीन बावड़ीयां हैं।

ग्राम पंचायत पढुआ द्वारा ग्राम पंचायत के आसपास के ऐतिहासिक स्थलों, सार्वजनिक स्थानों में 5 हजार से अधिक पौधे लगाये गये। जिससे ग्राम को सुंदर और मनमोहक के साथ शुध्द वातावरण मिल रहा है।

ग्राम पंचायत के पोषक ग्राम जमुनिया में 14 शताब्दी का प्राचीन भगवान कुबेर जी का मंदिर हैं। जहां पर भगवान कुबेर की रथ में सवार मूर्ति लंका पति रावण की कैद में कुबेर, भगवान शिव की आराधना करते हुये कुबेर जी, मंदिर के द्वार पर कुबेर जी की कैद व ध्यानमग्न प्राचीन मूर्तिया स्थापित है। अपनी पहचान को तरसते इस मंदिर का प्रचार–प्रसार ग्राम पंचायत पढुआ द्वारा किया गया। जिससे शासन के पुरात्व विभाग का भी ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ है। ग्रामवासियों व शासन के संयुक्त प्रयासों से आज भगवान कुबेर मंदिर देश प्रदेश दुनिया में प्रसिद्ध हो गया है।

आस्था के माध्यम से जागरूकता

ग्राम पंचायत पढुआ में वर्ष 2016 में प्रभात फेरी समिति का गठन किया। इस समिति में ग्रामीणजन शामिल हैं। गांव के हनुमान मंदिर में प्रति दिन प्रातः 5.00 बजे ग्रामवासी एकत्रित होते है। इसके बाद ग्रामवासियों द्वारा प्रभात फेरी निकाली जाती है। प्रभात फेरी में राम धुन के साथ ग्राम का भ्रमण किया जाता हैं। प्रभात फेरी में बच्चे भी शामिल होते हैं। प्रभात फेरी के सम्पन्न होते ही प्रति दिन 5 बच्चे सुविचार बोलते है । इससे बच्चों में बोलने की क्षमता का विकास हो रहा है और उन्हें सुविचार से प्रेरणा भी मिल रही है।

प्रत्येक रविवार की प्रभात फेरी में ग्रामवासियों द्वारा आर्थिक सहयोग दिया जाता है। इस राशि को संग्रहित किया जाता है व इस राशि का उपयोग उपयोग आर्थिक रूप से कमजोर परिवार की कन्याओं के विवाह, समुदाय के उपयोग के लिए सामग्री क्रय, शिक्षा इत्यादि के लिए किया जाता है। इस रविवार की प्रभात फेरी में ग्राम की समस्याओं एवं ग्राम विकास के विषयों पर विचार–गोष्ठि आयोजित की जाती है।

ग्राम पंचायत पढुआ द्वारा आरती समिति का गठन किया गया है। यह समिति मंदिर की देखरेख करती है और श्रद्धालुओं की पूजा आराधाना में सहयोग करती है। गांव के मंदिर में प्रति वर्ष धनतेरस के दिन भव्य महाआरती का आयोजन किया जाता है। प्रति वर्ष मेला आयोजित होता है। मंदिर व मंदिर प्रांगण के विस्तार विकास के लिये ग्राम पंचायत ने सामाजिक न्याय विभाग व पुरात्व विभाग को प्रस्ताव सहित आवेदन किया तथा मंदिर के प्रचार प्रसार के लिए स्थानीय तथा राष्टीय स्तर के न्यूज चौनलों पत्र पत्रिकाओं में तथा सोशलमीडिया में भी प्रचार करती चली आ रही हैं।

दैनिक आरती, महाआरती व मेले में ग्रामीणजनों को व्यक्तित्व विकास, शासन की योजनाओं, दैनिक उपयोग की जानकारी दी जाती है। जिससे जन–जागरूकता भी बढ़ रही है।

स्वच्छता

ग्राम पंचायत पढुआ जबलपुर जिले की सबसे पहली खुले में शौच मुक्त ग्राम

पंचायत है। ग्राम पंचायत में प्रत्येक घर मे शौचालय निर्मित है। शासन के स्वच्छ भारत मिशन के अन्तर्गत यहां पर सार्वजनिक स्वच्छता परिसर का निर्माण किया गया है। ग्राम पढुआ में 240 शौचालयों में से मात्र 38 शौचालय शासकीय राशि से बनाये गये शेष 202 शौचालय ग्राम पंचायत के जागरुकता अभियान के तहत हितग्राहियों ने स्वयं के खर्चे से बनाया जिसके लिए माननीय मुख्य मंत्री जी के द्वारा ग्राम पंचायत पढुआ को सम्मानित किया गया।

ग्राम पंचायत पढुआ में कचरा घर, गंदे पानी की निकासी, साफ सफल ,सार्वजनिक शौचालय बनाये गये हैं। गावं में सूखे कचरा व गीले कचरे का सही तरीके से निपटान किया जाता है।

खेलकूद गतिविधियां

शारीरिक विकास और मानसिक विकाश के लिये खेल मैदान वर्ष 2015 के पहले नही होने से ग्राम पंचायत क्षेत्र के युवाओं के सर्वांगीण विकास में बाधा आती थी। ग्राम पंचायत पढुआ में मनरेगा स्कीम के अन्तर्गत दो खेल मैदानों का निर्माण किया गया। खेल मैदान में क्रिकेट, कबड्डी, खो–खो व अन्य खेलों का आयोजन किया जा रहा है।

ग्राम पंचायत पढुआ को क्रीड़ा भारती द्वारा खेल गांव की उपाधि दी गई है। गांव के तकरीबन हरेक घर से एक युवा कुश्ती व कबड्डी स्पर्धा में नेशनल स्तर का खिलाड़ी है। शारीरिक विकास के लिए ग्राम पंचायत में ही मल्टी जिम बनाया गया है। खेलकूद गतिविधियों में संलग्न युवाओं का शारीरिक विकास तो हो ही रहा है साथ–साथ वे नशे आदि की लत से भी दूर हैं। ग्राम पंचायत में खेलकूद गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए विकास क्लब ओर युवा एवम खेल विकास समिति नाम के क्रीड़ा केंद्र संचालित किये जा र रहे हैं।

आजीविका

गावं की महिलाएं पहले घरेलू कार्य करती थी। छोटे मोटे खर्चो के लिए भी अपने परिवार पर निर्भर रहती थीं। वर्तमान में मध्यप्रदेश आजीविका मिशन जनपद पंचायत जबलपुर से ग्राम पंचायत पढुआ द्वारा महिला सशक्तिकरण के लिए सामंजस्य बनाकर स्व सहायता समूहों का गठन किया गया है।

ग्राम पंचायत पढुआ और आजीविका मिशन के करवरजेंस से ग्राम की महिलाओं को जागरूक करने व उन्हें आजीविका की गतिविधियों से जोड़ने के प्रयास किये गये हैं। स्व–सहायता समूहों में सिलाई, कढ़ाई, सहित उपलब्ध संसाधनों के अनुसार ग्राम में ही नवीन आजीविका की गतिविधियां संचालित की जा रही है।

शासकीय तालाबों को स्वसहायता समूह को लीज पर दिया गया है। जिससे तालाबों की अच्छे से देखरेख हो रही है और स्व–सहायता समूहों को आय के अतिरिक्त स्त्रोत भी मिल रहे हैं।

नशा मुक्त ग्राम पंचायत पढुआ

ग्राम पंचायत क्षेत्र में रहने वाले बहुत से लोगों में नशे की लत थी। नशे की लत के कारण परिवार में लड़ाई झगड़ा, महिलाओं के साथ मारपीट, गांव में अशांति, विवाद, सामाजिक कार्यक्रमो में विवाद की स्थिति बनती थी।

ग्राम पंचायत पढुआ द्वारा आजीविका मिशन की स्वसहायता समूह की दीदियों के सहयोग से ग्राम पंचायत स्तर पर नशा मुक्ति अभियान चलाया गया। अगर कोई व्यक्ति सार्वजनिक स्थान पर शराब पीता मिलता था उसके विरूद्ध ग्राम पंचायत द्वारा कार्यवाही की जाती है। शराबी व्यक्ति से अर्थदण्ड लिया जाता है। अगर कोई व्यक्ति शराब पीकर अपनी पत्नी, बच्चों के साथ हाथा पाई करता है तो ग्राम पंचायत द्वारा पुलिस में रिपोर्ट की जाती है। नशे की लत से छुटकारा दिलाने के लिए ग्राम पंचायत द्वारा नशेड़ी व्यक्यिों को नशा मुक्ति केन्द्र भेजा जाता है। नशे की रोकथाम के ग्राम पंचायत पढुआ द्वारा चलाये गये नशामुक्ति अभियान से ग्राम पंचायत क्षेत्र नशा मुक्त व शांत ग्राम से पहचाना जाता हैं।

कौशल विकास

ग्राम पंचायत पढुआ के युवाक एवं युवतियों को लघु एवम कुटीर उद्योगों के लिए प्रशिक्षण दिया जा रहा है। जबलपुर के पॉलिटेक्निक कालेज जबलपुर के द्वारा युवाओं को 3 वर्ष तक छह–छह माह का प्रशिक्षण मोटर वाइंडिंग, लाइट फिटिंग, नल फिटिंग आदि गतिवधियों पर दिया गया है। जिससे प्रशिक्षित युवक–युवतियों को स्वयं के रोजगार स्थापित व संचालित में मदद मिली।

सोशल मीडिया के माध्यम से जानकारी देना

ग्राम विकास योजनाओं में ग्रामीणजन सहभागी बनें इस लिये योजनाओं व कार्यक्रमों की जानकारी देने के लिए सोशल मीडिया प्लेटफार्म का उपयोग ग्राम पंचायत पढुआ में किया जाता है। ग्राम पंचायत स्तर पर प्रत्येक परिवार को ग्राम पंचायत द्वारा बनाये गये व्हाट्सएप ग्रुप में जोड़ा गया है। इस व्हाट्सएप ग्रुप के माध्यम से समय–समय पर नवीन सूचनाएं दी जाती है। शिकायत निवारण के लिए भी यह व्हाट्सएप ग्रुप बहुत कारगर बना है।

डॉ. संजय कुमार राजपूत
संकाय सदस्य

नौका विहार से पंचायत की आय में वृद्धि

बालाघाट जिले की जनपद पंचायत लालबर्रा के ग्राम पंचायत पाढ़रवानी में मनरेगा के अन्तर्गत पांच तालाबों को जोड़कर जल संरक्षण एवं संवर्धन में कार्य करने के पश्चात् तालाबों के आस पास जनभागीदारी से घाटों एवं पार्क का निर्माण कर तालाब में नौका विहार की शुरूआत की गयी। पंचायत पाढ़रवानी के प्रयास से बेरोजगारों को रोजगार मिला साथ ही साथ ग्राम पंचायत की स्वयं की आय (OSR) में वृद्धि हुई। आज की स्थिति में नौका विहार करने सैकड़ों लोग आ रहे है। तालाब में तीन बोट के माध्यम से लोगों को नौका विहार कराया जाता है। नौका बिहार करने वाले प्रति व्यक्ति से 10/–रूपये लिये जाते है तालाब के किनारे गार्डन बना है हरा भरा गार्डन होने के कारण लोग सुबह शाम घूमने आते है जल संरक्षण के कारण पूरी गर्मी में तालाब में पानी भरा रहता है एवं आस पास के दर्जनों गांव में जल स्तर में वृद्धि हुई है। नौका विहार से ग्राम पंचायत को प्रतिमाह 15 से 20 हजार की आय होती है ग्राम पंचायत की स्वयं की आय में वृद्धि होने पंचायत छोटे–छोटे कार्य करती है किसी योजना एवं अनुदान की राशि का उपयोग नही करती है।

पंचायत का मानना है कि मध्यप्रदेश की प्रत्येक पंचायत को अपना OSR अर्थात ग्राम पंचायत की स्वयं की आय में वृद्धि करना चाहिये ताकि आम जनता को मूलभूत सुविधायें दी जा सके।

सी.के. चौबे
संकाय सदस्य

'अ' से अक्षर अभियान

सतत विकास के 17 लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये झाबुआ जिले से साक्षरता का प्रतिशत बढाने तथा सभी के लिये समावेशी शिक्षा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से 'अ' से अक्षर अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के अन्तर्गत बालक बालिकाओं युवक एवं प्रौढ व्यक्तियों को शिक्षा के अवसर उपलब्ध कराते हुए एक मजबूत शिक्षा प्रणाली को विकसित किया जा रहा है। शिक्षा, सतत विकास के लक्ष्यों को प्रदान करने की रीढ एवं बुनियादी आवश्यकता है। शिक्षा स्वास्थ्य में सुधार एवं समुदायों को संगठित करती है शिक्षा, स्मार्ट एवं अक्षय ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में बात करते हुए नई स्थायी अर्थव्यवस्था को पनपने के लिये आवश्यक कौशल प्रदान करती है। वन, कृषि, पुनर्वास ध्वनि प्रबन्धन और स्वस्थ परिस्थिति की तंत्र को विकसित करती है। उच्च सामूहिक पारिवारिक प्रवासन तथा

गरीबों को आजीविका के अवसर उपलब्ध कराती है।

झाबुआ एक ऐसा जिला है जिसे सरकारी योजनाओं तक पहुंचाने के लिये एक बेहतर वातावरण और सामूहिक जागरूकता विकसित करने के लिये समाधान के साथ आने के लिये विशेष ध्यान और नवीन योजना की आवश्यकता है । 15 अगस्त 2021 को एक अभियान 'अ' से अक्षर अभियान उस समुदाय तक पहुंचाने के लिये शुरू किया गया था जो 18 वर्ष से अधिक आयु के है और औपचारिक शिक्षा के अवसर से चूक गये हैं अभियान की शुरूआत समुदाय से सीखने के माहौल को विकसित करने के विचार के साथ की गई ताकि वे अधिकारों को जानने में बेहतर पहुंच प्राप्त कर सकें तथा सामाजिक मूल्य और जन जागरूकता में बढोतरी हो सकें ।

झाबुआ जिले में मध्यप्रदेश राज्य में दूसरी सबसे कम साक्षरता दर है जो केवल 44.45 प्रतिषत है जो कि 2001 की जनगणना की तुलना में 41.4 थी । एक दषक में केवल 3.05 अकों की वृद्धि हुई फिर भी सबसे कम एस.टी. साक्षरता 37 प्रतिषत से कम थी बाद में दूसरी सबसे कम अलीराजपुर में भी महिला साक्षरता दर केवल 27.9 प्रतिशत है।

अभियान की योजना ओर पहल – कुछ अच्छे सी.एस.ओ./एन.जी.ओ. (टी.आर.आई.एफ. ट्रांसफार्मिगं रूरल इण्डिया फाउन्डेषन, एड.एट एक्शन, समावेश, एजूकेट गर्ल्स, प्रभुदास सिस्टर्स) की जमीनी उपस्थिति के आधार पर थांदला और पेटलावद विकास खण्ड से अभियान शुरू किया गया था स्वंय सहायता समूह की लामबन्दी एस.एच.जी के नेट वर्क और गांव तथा क्लस्टर स्तर पर इसके विभिन्न आयामों के साथ इन दोनों विकास खण्डों में एस.एच. जी द्वारा प्राथमिक लर्निग सेन्टर भी चलाए जा रहे है।

छात्रों के सामूहिक रूप से भाग लेने के लिये एक अच्छा मंच विकसित करने में मददगार रहे हैं और सीखने के माहोल को विकसित करने के लिये खुद को और दूसरों को अवसर प्रदान करते हैं । स्वसहायता समूहो के वालिन्टियर चेन्ज वेकटर इसमें बहुत मददगार साबित हो रहे हैं ।

इस अभियान का कार्यान्वयन दो चरणों में किया गया था प्रथम चरण में पायलट आधार पर दो ब्लाकों में क्रियान्वित किया गया था और फिर दूसरे चरण में प्रथम चरण की आवश्यक प्रतिक्रिया के साथ पूरे जिले में कार्यान्वित किया गया था । शिक्षा बैंकिग

ऐजेन्टों द्वारा धोखाधड़ी से संबंधित अपराधों को रोकने भी मदद करती है, आवश्यक वस्तु राशन सामग्री व्यवस्था और विपणन प्रदान करती है यह घर पर बच्चों का समर्थन करने के साथ–साथ निकासी में उपयोग किये जाने वाले मूल संख्या के आंकडे जानने में भी मदद करेगी तथा धन जमा करने में भी सहायक होगी।

प्रथम चरण में री आई.आई.एफ.ऐज्युकेट गर्ल्स, समर्थन प्रभुदास सिस्टर्स और यूनिसेफ) तथा शिक्षा विभाग एवं जन जातीय विभाग के प्रशासनिक कर्मचारियों को आन वोर्डिग जिला स्तरीय समिति का गठन किया गया।

माड्यूल, पाठयक्रम विकसित करने और ब्लाक दो प्रशिक्षण तथा सहायता प्रदान करने के लिये जिला कोर समिति बनाई गई, अभियान के लिये जिला और ब्लाक नामित किये गये। कार्यक्रम चलाने के लिये दो

प्रखण्डों में 100 ग्रामों की पहचान की गई है, शिक्षकों एस.एच.जी. चेज वेक्टर और युवा स्वयं सेवकों को ब्लाक ओरिएन्टेशन सह प्रशिक्षण दिया गया । सीखने की स्थिति और इच्छा जानने के लिये 18 आयुवर्ग से उपर के लक्ष्य के एम फार्म के माध्यम से शिक्षकों द्वारा 100 ग्रामों का सर्वेक्षण अवेयरनेस जनरेशन,दीवार लेखन, रैली और नुक्कड नाटक आयोजित किये गये। षिक्षा सामग्री का विकास किया गया और शिक्षकों के साथ सामग्री तैयार करने पर एक दिवसीय अभिविन्यास और प्रषिक्षण ताकि से समुदाय की

भागदारी के साथ चार्ट पेपर का उपयोग करके सामग्री तैयार कर सकें सामग्री पैकेज युक्त (हैगिंग व्हाईट बोर्ड, मार्कर,चाक चार्ट पेपर, स्केच पेन, पाठयक्रम की एक प्रति की फोटोकापी इत्यादि) होती है । 8 सितम्बर 2021 से षिक्षक एवं सामुदायिक स्वयं सेवकों द्वारा संयुक्त रूप से चिन्हित षिक्षण केन्द्रों पर कक्षाऐं प्रारम्भ की गई ।

द्वितीय चरण में – निजी स्कूलों की आन बोर्डिग कर, एस.एच.जी. सी.बी कैडर और युवा स्वयं सेवकों के साथ जिले में अभियान शुरू किया गया। इसमें आडियों, वीडियो, लर्निग किट का विकास कर पंचायत टी.वी. पर सापताहिक प्रदर्शन किया गया ।

अभियान के पहले चरण में 219 सामुदायिक षिक्षा केन्द्र स्थापित किये गये है अनुमानित 20000 समुदाय सदस्य कक्षाओं में भाग ले रहे है जिनमें से 14000 परीक्षा में बैठे है और परिणाम की प्रतीक्षा कर रहे हैं। यह अभियान अब एक सामाजिक और समुदाय संचालित अभियान है, जो गैर सरकारी संगठनों/सी. एस.ओ., निजी संस्थान, व्यापार और सामुदायिक समूहों द्वारा समर्थित है।

रीमा अंसारी
सहायक संचालक

सघन मिशन इंद्रधनुष 4.0

हाल ही में स्वास्थ्य मंत्रालय ने वर्चुअल माध्यम से सघन मिशन इंद्रधनुष 4.0 लॉन्च किया है, जो विश्व स्तर पर सबसे बड़ा टीकाकरण कार्यक्रम का हिस्सा है। इसके तहत सालाना 3 करोड़ से अधिक गर्भवती महिलाओं और 2.6 करोड़ बच्चों को सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम के माध्यम से कवर किया जाना है।

सघन मिशन इंद्रधनुष 4.0 के तहत तीन चरणों में 416 जिलों को कवर किया जाएगा, जिसमें 33 राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों में ''आजादी का अमृत महोत्सव'' के तहत् चिन्हित 75 जिले भी शामिल है।

मिशन इंद्रधनुष में 12 वैक्सीन–प्रिवेंटेबल डिजीज के खिलाफ टीकाकरण शामिल है जिनमें डिफ्थीरिया, काली खांसी, पोलियो, टिटनस, क्षय रोग, हेपेटाइटिस–बी, मैनिन्जाइटिस, निमोनिया, हिमोफिलस, इनफ्लुएंजा टाइप–बी, जापानी इंसेफलाइटिस, रोटावायरस वैक्सीन, न्यूमोकोकल, कंजूगेट वैक्सीन और खसरा–रूबेला शामिल है।

मिशन इंद्रधनुष के विभिन्न चरणों के दौरान कुल 3.86 करोड़ बच्चों और 96.8 लाख गर्भवती महिलाओं का टीकाकरण किया जा चुका है।

यह मिशन सुनिश्चित करेगा कि नियमित टीकाकरण सेवाएं बिना टीकाकरण वाले और आंशिक रूप से टीकाकरण वाले बच्चों एवं गर्भवती महिलाओं तक पहुंचे।

श्रृद्धा सोनी
खण्ड पंचायत अधिकारी

स्वच्छ पेयजल – भारत में शुद्ध पानी सभी को उपलब्ध कराना एक लक्ष्य

हम सभी को आने वाले ग्रीष्म ऋतु में पीने के पानी की समस्या से ग्रामीण क्षेत्रों में रुबरु होना पड़ता है। दिनों–दिन बड़ती जनसंख्या एवं पर्यावरण में बदलाव के कारण आज के समय में पानी स्वच्छ उपलब्ध कराना एक गंभीर समस्या है। लोगों द्वारा पेड़ों को अधिक मात्रा में कटाई करना तथा नदियों से ज्यादा मात्रा में रेत निकालने से पानी का लेविल बहुत नीचे चला गया है। भविष्य में होने वाला तीसरा विश्व युद्ध पानी पर ही होगा।

इसके साथ ही शासन द्वारा भी नदी जोड़ो योजना पर ज्यादा गंभीरता से कार्य नहीं हुआ। यही कारण है कि आज हम पानी के लिए परेशान हैं। वर्ष 2030 तक देश की 40 प्रतिशत आबादी को पीने का पानी उपलब्ध नहीं होगा, और 2050 तक जल संकट की वजह से 6 प्रतिशत देश की GPDP कका नुकसान होगा। अब भारत में 2024 तक देश के सभी ग्रामों में पीने का शुद्ध पानी पहुंचाने की महत्वकांक्षी योजना का ऐलान किया है।

आधारभूत पंचतत्वों में से एक जल हमारे जीवन का आधार है, जल के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। कवि रहीम का एक दोहा है ''रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून, पानी गये न ऊबरे मोती–मानस–चून''।

यदि जल न होता तो सृष्टि का निर्माण संभव न होता, यह एक ऐसा प्राकृतिक संसाधन है जिसका कोई मोल नहीं है। जीवन में जल की महत्ता को इसी से समझा जा सकता है कि बड़ी–बड़ी सम्भावनायें नदियों के तट पर विकसित हुई और अधिकांश प्राचीन नगर नदियों के तट पर ही बसे। जल की उपयोगिता को देखकर यह अत्यंत आवश्यक है कि हम न सिर्फ जल का संरक्षण करें, बल्कि उसे प्रदूषित होने से बचायें इस संबंध में हमारे जल संरक्षण की एक समृद्ध परम्परा रही है। ऋग्वेद में जल को अमृत के रूप तुल्य बताते हुए कहा गया – ''अप्सु अन्तः अमतं अप्सुभेषजं।

जल की संरचना – पूर्णतः शु+ जल रंगहीन, गंधहीन व स्वादहीन होता है। इसका रासायनिक सूत्र H_2O ऑक्सीजन के एक परमाणु तथा हाइड्रोजन के दो परमाणु बनने H_2O का एक अणु बनता है। वायुमण्डल में जल तरल ठोस तथा वाष्प तीनों रूपों में पाया जाता है।

मानव शरीर का लगभग 66 प्रतिशत भाग पानी से बना है तथा एक औसत व्यस्क के शरीर में 37 लीटर पानी की मात्रा होती है। मान मस्तिष्क का 75 प्रतिशत हिस्सा जल होता है। इसी प्रकार मनुष्य के रक्त में 83 प्रतिशत मात्रा पानी की होती है।

जल संकट और भारत – आबादी के हिसाब से विश्व का दूसरा सबसे बड़ा देश भारत भी जल संकट से जूझ रहा है। न सिर्फ शहरी क्षेत्रों में ग्रामीण अंचलों में जल संकट बड़ा है। वर्तमान में 20 करोड़ लोगों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध नहीं हो पा रहा है। उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान आदि में पानी की समस्याऐं बड़ी हैं। वहीं राज्यों के मध्य पानी से विवाद गहराये हैं। भूगर्भीय जल का योगदान अधिक होने से धरती भी सूख रही है। वहीं मीठे पानी का प्रतिशत कम हुआ है।

जल संसरक्षण एवं संचय के उपाय – जल जीवन का आधार है और यदि जीवन को बचाना है तो जल संरक्षण और संचय के उपाय करने होंगे, जल के स्रोत सीमित हैं। नये स्रोत है नहीं, ऐसे में जल स्रोतों को संरक्षित रखकर एवं जल का संचय कर हम जल संकट का मुकाबला कर सकते हैं।

1. सिंचाई के लिए ड्रिप सिंचाई का उपयोग करें।
2. फसलों के लिए पानी की कम खपत करके तथा अधिक पैदावार करके नदियों का उपयोग करें।
3. जल संकट से निपटने के लिए वर्षाकाल का जल संग्रहण ज्यादा करें।
4. जल प्रबंधन और जल संरक्षण की दिशा में जन जागरूकता को बड़ाने का प्रयास हो।
5. पानी के इस्तेमाल में हमें मितव्ययी बनना होगा।
6. जल संरक्षण के लिए पर्यावरण संरक्षण जरूरी है।

जल संचय की विधियां –

1. नलकूपों द्वारा रिचार्जिंग
2. गढ्ढे खोदकर।
3. सोकवेज या रिचार्ज साप्ट
4. खोदे कुंऐ द्वारा रिचार्जिंग
5. खाई बनाना
6. रिचार्ज टेंक

वास्तव में यह आज की जरूरत है कि हम वर्षा जल का पूर्ण रूप से संचय करें। यह ध्यान रखना होगा, बारिश की एक बूंद भी बेकार न जाये इसके प्रति जन जागृति और जागरूकता को भी बड़ाना समाज की आवश्यकता है। आने वाले समय में हमें अपनी आय का एक बड़ा हिस्सा पानी पर ही खर्च करना पड़ेगा, इसलिए हम अभी सेजागरूक होकर एवं संगठित रूप से कार्य कर इस समस्या का निराकरण कर सकते हैं।

शैलेन्द्र सिंह कुशवाहा,
संकाय सदस्य

सागर जिले में प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना वाटरशेड विकास

सागर जिला मध्य प्रदेश के सुप्रसिद्ध क्षेत्र बुंदेलखंड में स्थित है। बुंदेलखंड देश के उन इलाकों में से है जहां लोग पिछले कई सालों से जल की कमी का सामना कर रहे हैं यह कहना गलत होगा कि केवल जलवायु या भौगोलिक परिस्थितियों के कारण यहां पानी की कमी है। भारत के अधिकतर इलाके जहां जल संकट गंभीर रूप से व्याप्त है वहां बेहतर जल प्रबंधन का अभाव है यदि हम उपलब्ध वर्षा जल का ही सही तरीके से संचित कर के उपयोग में लाया जाए तो यह बड़ी समस्या हल की जा सकती है।

आवश्यकता आविष्कार की जननी होती है और शायद इसलिए आज सागर जिले के अनेकों लोग अपनी आवश्यकता के अनुरूप जल संरक्षण एवं प्रबंधन के अलग–अलग तरीके अपना रहे हैं। आज हम सागर जिले में प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना वाटर सेट विकास द्वारा किए गए जल संरक्षण प्रयास को सजा कर रहे है सागर जिले में किए गए जल प्रबंधन की तकनीकी से पूरे जिले की की छवि बदल दी है इन्हीं प्रयासों के कारण जल शक्ति मंत्रालय से राष्ट्रीय जल पुरस्कार में सर्वश्रेष्ठ ग्राम पंचायत श्रेणी के तहत पश्चिम क्षेत्र में प्रथम पुरस्कार एवं बेस्ट जिले की श्रेणी में तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

सागर जिला पिछले कुछ दशकों से लगातार अपनी प्राकृतिक संपदा खोता जा रहा था जिले में जल निकायों की घटती गुणवत्ता भूमि क्षरण और प्राकृतिक संसाधनों का दोहन पर्यावरण की दृष्टि से सबसे अधिक चिंता के विषय बन गए थे। यह क्षेत्र लगातार घटते भूजल स्तर और पीने पानी की कमी के कारण गंभीर परिस्थितियों का सामना कर रहा है भूजल संसाधनों के अत्यधिक दोहन के कारण कुआं ट्यूबवेल भी सूखने लगे थे।

परन्तु धीरे–धीरे जिले में प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना वाटरसेट एवं अन्य शासन की योजना के माध्यम से 4–डी मॉडल आधारित जल संरक्षण की तकनीकी अपनाई गई आज सागर जिला देश के लिए एक उदाहरण बन गया है जिले में 4–डी मॉडल यानी जमीन से प्रत्येक स्तर पर जल संरक्षण एवं संवर्धन किया

गया। जिले में खेत का पानी खेत में गांव का पानी गांव में की अवधारणा पर प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना अंतर्गत 05 विकासखण्डो (रहली,खुरई,केसली,बण्डौ एवं शाहगढ़) में सिंचाई के लिये खेत तालाब का मॉडल अपनाया गया है। इसके तहत 1326 किसानों के खेतों में खेत तालाब निर्मित कराये गये है इन तालाबों से 3515 हेक्टेंयर भूमि में सिंचाई सुविधा का सृजन हुआ है।

प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना अंतर्गत जल संरक्षण का सपना साकार करते हुये सागर जिले की जनपद पंचायत रहली के ग्राम पिपरिया गोपाल एवं ग्राम चरखारी में निर्मित खेत तालाब पूरे जिले में जल संरक्षण की दिशा में एक मॉडल बने है इन दोनों ग्रामों में प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना से 134 खेत तालाब

निर्मित हुये है और अन्य योजनाओं से 78 खेत तालाब निर्मित हुये है। इस तरह इन दोनो ग्रामों में 212 खेत तालाब निर्मित हुये है। इन ग्रामों में पूर्व में चना एवं मसूर की फसल की पैदावार 08 से 10 क्विंटल प्रति हेक्टेयर थी जो कि अतिन्यून थी। निर्मित खेत तालाब से सृजित सिंचाई के कारण चना एवं मसूर की पैदावार 15 से 18 क्विंटल प्रति हेक्टेयर हो गई है साथ ही गेहूं की उत्पादन भी 30 से 35 क्विंटल प्रति हेक्टेयर हो रहा है।

झनक सिंह कुहकुटे
संकाय सदस्य

धवाड़ एक आदर्श ग्राम पंचायत के रूप में विकसित है

बुदेंलखण्ड नगरी में जिला छतरपुर अंतर्गत राजनगर जनपद पंचायत की ग्राम पंचायत धवाड़ जिसकी लगभग 2356 की आबादी वाले ग्राम पंचायत में 1196 मतदाता है जिसमें 650 पुरूष एवं 546 महिला है इस गांव में लगभग 409 परिवार निवास करते है। मंगल भवन एवं पार्क निर्माण के पूर्व में ग्रामीणो को सांस्कृतिक धार्मिक एवं मांगलिक कार्य करने एवं आयोजन करने हेतु लोगो को घरो में ही कार्यक्रमो का आयोजन करवाना पडता था जिसके कारण लोगो को बैठाने में जगह कम पडती थी और कई समस्याओ का सामना करना पडता था जब मंगल भवन इस ग्राम पंचायत में नही था तो वहां के ग्राम वासियों को बहुत परेशानी होती थी और लोगो को हर कार्य के लिए गांव के बाहर खजराहो या राजनगर कार्यक्रम करवाने के लिए जाना पड़ता था जिससे ग्राम वासियो के परिवारो को परेशानी होती थी और आर्थिक व्यय भी ज्यादा होता था और लोग धार्मिक कार्य मांगलिक कार्यक्रमो के लिए ग्राम के बाहर दूसरी जगह व्यवस्था करवानी पड़ती थी और सामाजिक कार्यो के लिए लोगो को इकटठा करवाना मुश्किल होता था, या गांव में ही कार्यक्रम करते थे तो बैठने की पर्याप्त व्यवस्था नहीं होती थी जिससे लोग इकटठा होकर अच्छे से कार्यक्रमों को संपन्न नहीं कर पाते थे।

इससे इस ग्राम पंचायत में मंगल भवन एवं पार्क की आवश्यकता महसूस हुई जहां पर्याप्त मात्रा में स्थान उपलब्ध हो और लोगों का आर्थिक एवं सामाजिक परेशानियां न हो इसके लिए ग्राम वासियों की समस्या को देखते हुए ग्राम पंचायत के सचिव संजय मिश्रा, सरपंच दशरथ सेन एवं जी.आर.एस. संदीप मिश्रा के

सहयोग से ग्राम पंचायत में सामुदायिक मंगल भवन निर्माण वर्ष 2018–19 में 12 लाख रूपये एवं पार्क निमार्ण का कार्य वर्ष 2020–21 में स्वीकृत हुआ जिसकी लागत राशि 6.20 लाख रूपये की लागत से निर्माण कार्य कराया गया।

जिससे लोगो को सभी धार्मिक कार्य मांगलिक कार्य एवं शादी समारोह करना आसान हो गया एवं पार्क निर्माण से बच्चों के खेलने कि लिए पर्याप्त एवं सुरक्षित जगह हो गई ताकि बच्चों का मानसिक विकास के साथ–साथ शारीरिक विकास भी हो सकेगा एवं ग्राम के महिला एवं बुजुर्गो के मनोरंजन के लिए एवं बैठने, टहलने के लिए जगह सुनिश्चित हो सकी एवं गांव की सामुदायिक विकास के लिए ये अति आवश्यक निर्माण कार्य है। जिसके कारण ग्रामवासियो मे कार्यक्रम आयोजन के लिए समुचित स्थान की व्यवस्था हो गई और लोगो में इस कार्य के प्रति सराहनीय कार्य बताया गया एवं खुशी हुई।

ग्राम पंचायत धवाड में 21 फरवरी 2022 को म.प्र. के माननीय राज्यपाल श्री मंगू भाई सी. पटेल, जी के द्वारा एवं खजुराहो सांसद श्री बी.डी. शर्मा जी के द्वारा पार्क एवं सामुदायिक मंगल भवन का उद्घाटन किया गया एवं वृक्षारोपण का भी कार्य किया गया है। यह ग्राम पंचायत एक आर्दश ग्राम पंचायत के रूप में स्थापित है।

लवली मिश्रा,
संकाय सदस्य